सावित्री की कहानी

श्रीपाद जोशी

बच्चों की कहानियाँ

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा

हमारी बात

हमारे देश की संस्कृति दुनिया में सबसे पुरानी और काफी समृद्ध है। मगर आपसी झगड़ों, जलन और बैर की वजह से हम कमजोर हो गये हैं और इसी वजह से डरी-सहमी हालत में जी रहे हैं। नये जमाने की शिक्षा भी हमें सुधार नहीं पाई है। इसीलिए इस कमजोर और खतरनाक हालत से हम उबर नहीं पा रहे हैं। फिर भी यह हकीकत है कि हमारी संस्कृति अत्यंत जीवंत है, कभी मिट नहीं सकती है।

दूसरे प्राणियों के मुकाबले आदमी में यह एक विशेषता है कि उसमें धर्म की सूझबूझ है। अच्छा-बुरा, धर्म-अधर्म परखने का उसे विवेक है। मैं तो इसे ही सच्चा धर्म मानता हूं। 'धर्म' वही है जिससे आदमी का सुखी, सार्थक जीवन बनता है। धार्मिक इन्सान समझता है कि दूसरों के सुख में उसका भी सुख है। दूसरों को तबाह करके कोई सुखी नहीं हो सकता। दूसरों के दुःख से जो सुख उठाता है, वह अधर्मी है।

सच्चाई और अहिंसा, धर्म पर चलने के दो रास्ते हैं। दुनिया के सभी धर्मों में इन दो बातों पर जोर दिया गया है। हिन्दू, इस्लाम, बौद्ध, ईसाई, पारसी, जैन, सिख आदि सभी धर्मों के पैगम्बरों ने धर्म के जिन आदर्शों की बात कही है, वह हर इन्सान के लिए समान रूप से लागू होती है। हमारे देश की परंपरा में सब धर्मों के लिए इज्जत की भावना रही है। हिन्दू धर्म का दायरा बहुत बड़ा और सबका भला चाहनेवाला रहा है। अफसोस है तो इस बात का कि हम लोगों में एक के बाद एक कमजोरियां आती गईं और एक उदार धर्म की अनमोल दौलत हम संभाल नहीं सके।

आज इस बात की जरूरत है कि दुनिया के विकसित धर्मों में हमारे लिए जो आवश्यक बातें कही गयी हैं उन्हें हम समझें और अपने जीवन में उन पर चलने की कोशिश करें।

नई पीढ़ी को सही समझ और शिक्षा देने के लिए ऐसे विचार उनके सामने रखना जरूरी है जिससे वे आदर्शों की तरफ प्रेरित हों और जिन्दगी का सही रास्ता उन्हें मिल सके।

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा ने इसी उद्देश्य से दुनिया के मुख्य धर्मों में जो शिक्षाप्रद कहानियां हैं, बड़े-बड़े संत-पैगम्बरों की जिन्दगी में जो सच्ची घटनाएं हुई हैं, उन्हें लेकर एक सौ सचित्र पुस्तकें छापने की योजना बनाई है।

कहानियां इस तरह रखी गयी हैं कि बच्चों को वे उपदेश नहीं, जीवन से जुड़ी हुई मालूम हों और आसानी से समझ में आ जायें। मुझे उम्मीद है कि बच्चों के माता-पिता भी इन कहानियों को दिलचस्पी से पढ़ेंगे और अपने जीवन को समृद्ध करेंगे।

मुझे उम्मीद है कि इस कोशिश को पसन्द किया जायेगा, इस पर अमल किया जायेगा और इसका प्रचार किया जायेगा।

मोरारजी देसाई

अध्यक्ष,
हिन्दुस्तानी प्रचार सभा

सावित्री की कहानी

श्रीपाद जोशी

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा
बम्बई

© हिन्दुस्तानी प्रचार सभा, १९८२

संपादक :

मूलशंकर भट्ट

चित्रकार

कृ. ल. मानकर

प्रकाशक :

वाडीलाल डगली

मानद मंत्री

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा

महात्मा गांधी मेमोरियल बिल्डिंग

७ – नेताजी सुभाष रोड

बंबई–४०० ००२

मुद्रक :

जितेन्द्रभाई ठाकोरभाई देसाई

नवजीवन मुद्रणालय

अहमदाबाद–३८० ०१४

मूल्य :

दो रुपये

सावित्री की कहानी

हमारे बचपन की बात है ।

एक दिन हमारी कक्षा के मास्टर साहब बीमार होने की वजह से स्कूल नहीं आये थे । उनकी जगह एक दूसरे अध्यापक आये । हमें मालूम था कि वे बड़ी अच्छी कहानियां सुनाते हैं । हम सबने उनसे अनुरोध किया कि वे हमें कोई बढ़िया कहानी सुनायें ।

अध्यापकजी ने हमसे पूछा, ''आप कैसी कहानी चाहते हैं ?''

सबने तरह-तरह की कहानियों के सुझाव दिए ।

लड़कियों में से एक ने उठकर कहा, ''गुरुजी, परसों वट-पूर्णिमा या व्रत-पूर्णिमा है । उस दिन वट-सावित्री का व्रत रखा जाता है । मैं चाहती हूं कि

आप हमें सावित्री की कहानी सुनायें।"

लड़के बोल उठे, "छिः छिः, हमें लड़कियोंवाली कहानी नहीं सुननी।"

अध्यापकजी ने सबको शांत किया और बोले, "सावित्री की कहानी सिर्फ लड़कियों के लिए ही महत्त्व नहीं रखती। वह तो हमारी भारतीय संस्कृति की एक जीती-जागती ज्योति है जो हमें लगातार प्रकाश देती आयी है।

"फिर यह समझना भी गलत है कि यह केवल सावित्री की कहानी है। वह जितनी सावित्री की है उतनी ही उसके पति सत्यवान, पिता अश्वपति, ससुर धुमत्सेन आदि की भी कहानी है।"

"तो फिर हम वह जरूर सुनेंगे," सारे लड़के बोल उठे।

अध्यापकजी ने कहानी सुनानी शुरू की, "पुराने जमाने में मद्रदेश में अश्वपति नाम का एक राजा राज करता था।"

बीच में ही एक लड़के ने पूछा, "गुरुजी, यह मद्रदेश कहां था ? क्या आजकल का मद्रास राज्य ही पुराने समय में मद्रदेश कहलाता था ?"

अध्यापकजी ने कहा, "नहीं, पुराना मद्रदेश पंजाब में रावी और झेलम नदियों के बीच में था। बड़ा उपजाऊ इलाका था और लोग भी अच्छे खुशहाल थे।

"राजा अश्वपति धर्म का पालन करनेवाला, अपनी प्रजा की भलाई चाहनेवाला और उदार था। उसकी प्रजा उसे बहुत प्यार करती थी, इज्जत देती थी। मगर उसे कोई संतान न थी। वह बहुत उदास रहता था। जब उसने संतान-प्राप्ति के लिए कड़ी तपस्या की तो उसे एक लड़की हुई, जिसका नाम सावित्री रखा गया।

"सावित्री इतनी सुन्दर, बुद्धिमान और तेजस्विनी थी कि जब वह बड़ी हो गई तब उससे शादी करने के लिए एक भी राजपुत्र आगे नहीं आया।"

"गुरुजी, सावित्री के पिता तो महाप्रतापी राजा अश्वपति थे। उनके पास धन-दौलत भी कम नहीं थी। फिर उन्होंने अपनी बेटी के लिए अच्छा-सा वर क्यों नहीं ढूंढ़ निकाला ?" एक लड़की ने पूछा।

अध्यापकजी हंसकर बोले, "बेटी, आजकल जिस तरह रुपया-पैसा देकर बेटी के लिए वर खरीदा जाता है, वैसा रिवाज उन दिनों प्रचलित नहीं था। लड़का या लड़की के गुण, रूप, खानदान, घरवालों का चाल-चलन वगैरह बातों को खास महत्त्व दिया जाता था। दहेज देकर लड़के या लड़की को खरीदने की बात बहुत बुरी समझी जाती थी।

"तो मैं कह रहा था, जब कोई राजपुत्र सावित्री से शादी करने के लिए आगे नहीं आया, तो राजा अश्वपति ने अपनी बेटी से कहा, "बेटी, तुम्हारे लिए विवाह का प्रस्ताव लेकर कोई भी लड़का नहीं आ रहा है। ऐसी हालत में अच्छा यह है कि तुम खुद जाकर कोई अच्छा-सा वर ढूंढ़ लो। तुम जिसे भी पसंद करोगी उससे मैं तुम्हारा ब्याह कर दूंगा।"

सावित्री ने पिता की बात मान ली और अपने पिता के वृद्ध मंत्रियों को साथ लेकर वर की खोज में निकल पड़ी। अनेक दिशाओं की यात्रा करके सावित्री वापस लौटी।

पिता ने पूछा, "बेटी, क्या तुम्हें अपने मन के मुताबिक वर मिल गया है?"

सावित्री शरमाते हुए बोली, "जी हां, पिताजी मैंने अपने लिए वर ढूंढ़ लिया है।"

राजा अश्वपति बड़े खुश हुए। उन्होंने पूछा, "वह कौन भागवान पुरुष है बताओ तो सही!"

सावित्री ने विस्तार के साथ अपनी यात्रा की कहानी सुनायी। अंत में वह बोली, "शाल्व देश के राजा धुमत्सेन के सुपुत्र सत्यवान को मैंने अपने पति के रूप में पसंद किया है। अगर आपको कोई आपत्ति न हो तो मैं उनसे ब्याह करूंगी।"

"गुरुजी, यह शाल्व देश कहां था?" एक लड़के ने पूछा।

"हस्तिनापुर मतलब दिल्ली से उत्तर में, आजकल के हरियाणा राज्य में यह शाल्व देश था," अध्यापकजी ने बताया।

"तो क्या सावित्री के पिताजी ने उस विवाह के लिए अपनी अनुमति दे दी?"

एक लड़की ने उत्सुकता से पूछा ।

''हां बेटी, मगर वह मामला इतना आसान नहीं था । जब सावित्री अपनी यात्रा का हाल सुना रही थी, उस वक्त नारद मुनि वहां बैठे थे । सावित्री का फैसला सुनकर वे बोल उठे, ''राजा, सर्वनाश हो गया ।''

राजा अश्वपति ने पूछा, ''महाराज, आप ऐसा क्यों कहते हैं ? क्या सत्यवान अच्छा लड़का नहीं है ?''

नारद मुनि ने कहा, ''ऐसी बात नहीं है । लड़का बहुत ही सुशील और तेजस्वी है । उसके पिता राजा धुमत्सेन भी बहुत सच्चरित्र हैं, शूरवीर हैं, पर वे अंधे हो गये हैं और उनके शत्रुओं ने उन्हें गद्दी से हटा दिया है । अब वे अपनी धर्मपत्नी और पुत्र के साथ वन में रहकर ऋषि का-सा जीवन बिता रहे हैं । बड़ी दुर्गति हुई है उन बेचारों की !''

राजा अश्वपति बोले, ''मुनिवर, आप उसकी चिंता न करें । मेरी तो यह इकलौती बेटी है । विवाह के बाद वही मेरी राज्य की मालकिन बनेगी । तब उन्हें किसी बात की कमी नहीं रहेगी ।''

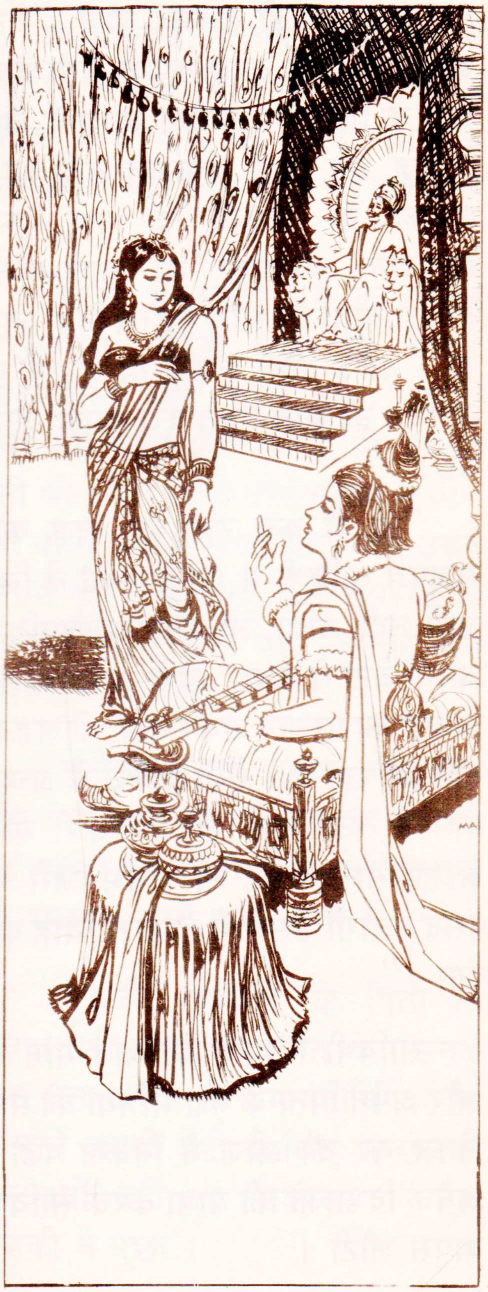

नारद मुनि बोले, "यह बात नहीं है । राजन् ! सबसे बड़े दु:ख की बात यह है कि सत्यवान अल्पायु है । आज से ठीक एक साल बाद वह मर जायेगा । ऐसी स्थिति में उससे विवाह करना सावित्री के लिए कहां तक उचित होगा ?"

राजा अश्वपति इससे बड़े दु:खी हुए । उन्होंने सावित्री से कहा, "बेटी, सुना तुमने ? क्या अब भी तुम सत्यवान से ब्याह करना चाहोगी ?"

सावित्री बोली, "पिताजी, विवाह तो मन से किया जाता है, शरीर से नहीं । मैंने जिसे एक बार अपने मन से अपना पति माना है, उसे किसी भी हालत में त्याग नहीं सकती । वे अल्पायु हों या दीर्घायु, मेरे लिए वे ही पति हैं । दूसरे पुरुष का विचार भी मन में लाना मेरे लिए लज्जा और पाप की बात होगी ।"

नारद मुनि और अश्वपति ने सावित्री को समझा-बुझाकर, उसके फैसले से हटाने की लाख कोशिश की, पर उसने एक न मानी । अन्त में अश्वपति को उसकी बात स्वीकार करनी पड़ी । उसने सत्यवान के साथ सावित्री का ब्याह कर दिया ।

"फिर क्या हुआ गुरुजी ? क्या नारद मुनि की भविष्यवाणी झूठी निकली ?" एक लड़की ने पूछा ।

"नहीं बेटी, जो होना था सो हो गया । वैसे राजा धुमत्सेन ने भी अपनी गरीबी और बुरी हालत के कारण इस विवाह का विरोध करना चाहा । पर राजा अश्वपति और सावित्री दोनों टस-से-मस न हुए ।

"जंगल में ही सत्यवान-सावित्री का विवाह हो गया । विवाह के बाद सावित्री अपने पति और सास-ससुर के साथ जंगल में रहने लगी । उसने अपने कीमती गहने और कपड़े उतार दिए, और उन लोगों की तरह वल्कल पहन लिए । एक साधारण महिला की तरह वह घर का काम करने लगी ।

"जब एक साल बीतने को आया तब सावित्री का दिल धड़कने लगा । अपने पति को मौत के शिकंजे से बचाने

का उसने निश्चय किया ।

उस अंतिम दिन से पहले तीन दिन उसने त्रिरात्र व्रत ले लिया । इस व्रत में तीन दिन और तीन रात उपवास रखते हैं और सतत खड़े रहते हैं । सत्यवान की मौत के बारे में वहां किसी को कुछ भी पता नहीं था । इसलिए सावित्री के उस त्रिरात्र व्रत से सबको आश्चर्य तो हुआ, पर किसी ने उसे नहीं रोका ।

चौथे दिन जब सत्यवान हमेशा की तरह फल और लकड़ी लाने के लिए जंगल जाने को निकले तो सावित्री ने उनसे कहा, "आर्यपुत्र, आज मैं भी आपके साथ जंगल चलूंगी । आपको छोड़कर रहने से मेरा जी घबड़ाता है ।"

सत्यवान ने कहा, "आर्ये, तुम कभी घने जंगल में नहीं गयी हो । फिर उपवास के कारण बहुत थक भी गयी हो । ऐसी हालत में तुम आज मेरे साथ न चलो तो अच्छा होगा । फिर भी अगर तुम्हारी इतनी इच्छा हो तो पिताजी से पूछकर मेरे साथ जरूर चल सकती हो ।"

सावित्री ने ससुरजी से आज्ञा ली और सत्यवान के साथ घने जंगल में चली गयी ।

अध्यापकजी थोड़ी देर के लिए चुप रहे, जैसे आगे बढ़ने से पहले वे कुछ आराम करना चाहते हों । लेकिन हमें इतना धैर्य कहां था ?

सब एक साथ पूछ उठे, "फिर क्या हुआ गुरुजी ?"

"बताता हूं, बताता हूं," अध्यापकजी हंसकर आगे कहने लगे, "सावित्री और सत्यवान घने जंगल में बहुत दूर तक गये । पहले सत्यवान ने पेड़ पर चढ़कर मीठे, पके फल तोड़े और फिर सूखी लकड़ी काटने में लग गये । लेकिन पता नहीं क्या हुआ कि उनका सिर चकराने लगा, शरीर से पसीना छूटने लगा और दिल धड़कने लगा ।

सावित्री के पास आकर वे बोले, "सावित्री, मुझे बहुत थकावट महसूस हो रही है । मेरा अंग-अंग ढीला पड़ गया है और मुझे नींद-सी आने लगी है ।"

सावित्री ताड़ गयी कि वह अंतिम पल अब आ पहुंचा है जिसका डर उसे एक साल से सता रहा था । वह जमीन पर बैठ गयी और सत्यवान का सिर उसने अपनी गोद में ले लिया । उसकी प्रखर तपस्या के कारण उसकी आंखों में दिव्य ज्योति की तरह एक अद्भुत शक्ति आ गयी । उसे वह सब दिखायी देने लगा जो साधारण आंखों को कभी दिखायी नहीं देता है ।

थोड़ी देर में वह देखती क्या है कि एक सांवले रंग का, बड़ा ही तेजस्वी पुरुष सत्यवान की तरफ टकटकी बांधे, धीरे-धीरे आगे बढ़ रहा है ।

उसने लाल रंग की धोती पहनी थी । उसी रंग का एक अंगवस्त्र उसके बदन पर था । सिर पर था किरीट । उसके हाथ में लंबा-सा पाश यानी फंदा था । वह बड़ा ही भयावना दिखाई देता था ।

उसे देखते ही सावित्री कांप उठी । उसने धीरे से अपने पति का मस्तक

जमीन पर रख दिया, और खड़े होकर, बड़ी नम्रता से प्रणाम करके उनसे पूछा, "महाराज, आप कौन हैं ? किस काम से यहां पधारे हैं ?"

वे यमराज थे ।

उन्होंने गंभीर आवाज में कहा, "बेटी, मैं यमराज हूं । तुम्हारे पति की उम्र खत्म हो चुकी है । उसे ले जाने के लिए मैं आया हूं । तुम बड़ी पतिव्रता हो, इसीलिए तुम मुझे देख सकी हो, और मुझसे बात भी कर सकती हो ।"

सावित्री ने पूछा, "हे भगवन्, मैंने तो सुना था कि आदमियों को ले जाने के लिए आपके दूत आया करते हैं । फिर आपने खुद आने का कष्ट क्यों उठाया ?"

यमराज बोले, "साधारण आदमियों को ले जाने के लिए मेरे दूत ही आते हैं । सत्यवान बड़ा ही धर्मनिष्ठ, तेजस्वी, सद्गुणों का पुतला था । उसे ले जाने के लिए खुद ही आना मैंने ठीक समझा ।"

इतना कहकर यमराज ने अपना फंदा फेंका । सत्यवान की देह से, अंगूठे जितनी बड़ी आत्मा बाहर निकाली और उसे बांधकर अपने साथ ले चले ।

आत्मा के निकल जाने से सत्यवान का शरीर अचेत और निस्तेज हो गया । यमराज सत्यवान की आत्मा को लेकर दक्षिण की ओर बढ़ने लगे तो पतिव्रता सावित्री भी उनके पीछे-पीछे चलने लगी ।

यमराज बोले, "सावित्री, अब लौट जा । तूने अपना काम कर लिया है । अब जा, उस शरीर का दाह संस्कार कर दे ।"

सावित्री बोली, "यह तो सनातन धर्म है कि मेरे पति को जहां भी ले जाया जायेगा या वे खुद जहां जायेंगे, वहां मैं आऊंगी । पंडित लोगों ने कहा है कि सात कदम साथ चलने से मित्रता हो जाती है । मैं अबतक आपके साथ न मालूम कितने कदम चली आयी हूं । आपके साथ मेरी मित्रता हो गयी है । इसी मित्रता के नाते मैं आपसे प्रार्थना करती हूं कि मेरा गृहस्थाश्रम अधूरा रह

"सत्यवान का सिर उसने अपनी गोद में ले लिया।"

गया है । आप मेरे पतिदेव को मुझसे जुदा न करें, ताकि मैं अपने गृहस्थाश्रम धर्म को निभा सकूं ।''

सावित्री की बातों से यमराज बहुत संतुष्ट हुए और बोले, ''सावित्री, इस सत्यवान के प्राण छोड़कर तू मुझसे जो भी चाहे, वर मांग ले और वापस चली जा ।''

सावित्री ने पहला वर मांगा, ''मेरे ससुर अंधे हो जाने से अपना राज खो बैठे हैं । आपकी कृपा से उन्हें फिर से दृष्टि प्राप्त हो और वे सूर्य के समान तेजस्वी एवं शक्तिशाली सम्राट बनें ।''

यमराज ने कहा, ''तथास्तु ! तेरी यह मांग जरूर पूरी होगी । अब तू और आगे न चल, लौट जा । बहुत ही थक चुकी है ।''

सावित्री बोली, ''पति के साथ रहने पर थकान कैसी ? यह तो निश्चित है कि जहां मेरे पति रहेंगे वहीं मैं भी रहूंगी । इसलिए आप मेरे पतिदेव को जहां ले जा रहे हैं, वहां मैं भी चलूंगी । फिर, आप तो महान सत्पुरुष हैं । सत्पुरुषों की संगति कभी निष्फल नहीं होती । आदमी को चाहिए कि वह हमेशा सत्पुरुषों के साथ रहे ।''

सावित्री की बातों से संतुष्ट होकर यमराज बोले, ''सावित्री, तेरी बातें मन को मोह लेती हैं । अतः सत्यवान के प्राणों को छोड़कर तू मुझसे चाहे जो वर मांग ले और वापस चली जा ।''

सावित्री ने दूसरा वर मांगा, ''मेरे ससुर का छीना हुआ राज उन्हें वापस मिल जाय और वे अपने धर्म का पालन करते रहें ।''

यमराज बोले, ''तेरे ससुर धुमत्सेन को उनका खोया हुआ राज फिर से मिलेगा और वे स्वधर्म का पालन भलीभांति करते रहेंगे, यह वर मैं तुझे देता हूं । अब तू लौट जा ।''

सावित्री ने कहा, ''आपने सारी प्रजा को नियमों से बांध दिया है, इसीलिए आप नियमन करनेवाले अर्थात् यम कहलाते हैं । किसी भी प्राणी का अपने काम से, विचार से या शब्द से बुरा न

करना, बुरा न चाहना सज्जनों का सनातन धर्म है। इसलिए सज्जन लोग शत्रु पर भी दया करते हैं।''

यमराज बोले, ''सावित्री, तेरी ये बातें बड़ी लुभानेवाली हैं। मैं उन्हें सुनकर बहुत प्रसन्न हुआ हूं। इसलिए तू इस सत्यवान के प्राणों को छोड़कर कोई भी अच्छा-सा वर मांग ले।''

सावित्री ने तीसरा वर मांगते हुए कहा, ''मेरे पिता बड़े सम्राट हैं, पर उनको कोई लड़का नहीं है। आप कृपा कर मुझे यह वर दें कि मेरे पिताजी के सौ लड़के हों और वे कुल की वृद्धि करें।''

यमराज बोले, ''हे कल्याणी, तेरे पिता के अत्यंत तेजस्वी और कुल की वृद्धि करनेवाले सौ पुत्र जरूर होंगे। अब तू लौट जा। तू बहुत दूर चली आई है।''

सावित्री बोली, ''पति के पास रहने से मेरे लिए यह दूरी कुछ भी मतलब नहीं रखती। मेरा मन इससे भी दूर चला जाता है। भगवन्, आपने सबके लिए समान धर्म तय किया है और उसी के अनुसार सब लोग चलते हैं। इसीलिए आप धर्मराज कहलाते हैं। सच तो यह है कि मनुष्य को सज्जनों पर जितना भरोसा होता है, उतना खुद पर भी नहीं होता। इसलिए हर आदमी सज्जनों से प्रेम करना चाहता है।''

यमराज बोले, ''हे कल्याणी, तूने यह जो बात कही है, वैसी बात इससे पहले मैंने कभी नहीं सुनी थी। उससे प्रसन्न होकर मैं तुझसे कहता हूं कि इस सत्यवान के प्राणों को छोड़कर तू कोई भी वर मुझसे मांग ले।''

सावित्री ने चौथा वर मांगा, ''महाराज, मुझे सत्यवान से ऐसे सौ तेजस्वी पुत्र मिलें जो हम दोनों के कुल का उद्धार करें।''

यमराज बोले, ''हे नारी, तेरी इच्छा पूरी होगी। सत्यवान से तुझे सौ तेजस्वी पुत्र प्राप्त होंगे।''

सावित्री चलती ही रही।

उसने यमराज से कहा, ''सज्जनों

का धर्माचरण सदैव अटल होता है । वे किसी से नहीं डरते । अपने सत्य के बल पर वे सूर्य की भी रक्षा करते हैं । मतलब यह कि सज्जन ही सारे समाज का आधार होते हैं ।"

यह सुनकर यमराज बोले, "हे पतिव्रते, तेरी इन बातों ने मुझे मोह लिया है । इसलिए तू अब कोई भी अनोखा वर मुझसे मांग ले ।"

इस पर सावित्री झट बोली, "महाराज, अब तक आप 'सत्यवान के प्राणों को छोड़कर' की शर्त लगाते रहे । इस बार यह शर्त आपने नहीं लगायी है । इसलिए मैं आपसे यह वर मांगती हूं कि मेरे पति सत्यवान फिर से जीवित हो जायें, क्योंकि पति के बिना जीना तो मरने के समान ही होता है ।

"आप तो पहले ही मुझे सौ पुत्रों का वर दे चुके हैं और मेरे पति को लिये जा रहे हैं । यह कैसे हो सकता है ? इसलिए आप मेरे पति को लौटा दें ।"

यमराज समझ गये कि सावित्री ने उन्हें उनके ही शब्दों में बांध लिया है ।

वे बोले, "तथास्तु । तेरा पति तुझे मिल जायेगा," इतना कहकर उन्होंने अपने पाश में बंधे सत्यवान के प्राणों को मुक्त कर दिया, और सावित्री को आशीर्वाद देकर अपने लोक को लौट गये ।

अध्यापकजी थोड़ी देर के लिए रुक गये ।

"कितनी होशियार होती थीं पुराने समय की लड़कियां !" एक लड़की बोली ।

"आगे क्या हुआ गुरुजी ?" एक लड़के ने पूछा ।

"अब सावित्री उस जगह पर लौटी जहां उसके पति का मृत शरीर जमीन पर पड़ा हुआ था । उसने फिर से सत्यवान का सिर अपनी गोद में ले लिया ।

धीरे-धीरे सत्यवान ने आंखें खोलीं और बोला, "अरे, मैं कितनी देर सोया रहा ? तूने मुझे जगाया क्यों नहीं ? और वह सांवले रंग का तेजस्वी पुरुष कहां

चला गया जो मुझे अपने साथ लिये जा रहा था ?"

सावित्री ने कहा, "आर्यपुत्र, वे तो भगवान यमराज थे । वे वापस चले गए । अब उठिए, हम अपने घर लौट चलें । "

वह सत्यवान को लेकर वापस चलने लगी । अंधेरा छा चुका था ।

सावित्री चाहती थी कि रात भर वहीं ठहरकर, सुबह होने पर लौटा जाय । पर सत्यवान जानता था कि उनके न जाने से उसके माता-पिता बड़ी चिंता में पड़ जायेंगे । इसलिए वह अंधेरे में ही, अपने जाने-पहचाने रास्ते से सावित्री के साथ लौटने लगा ।

इधर धुमत्सेन का अंधापन जाता रहा । वह अपने बेटे और बहू को न पाकर बहुत चिंतित हुआ । तभी सत्यवान और सावित्री आश्रम लौटे । आश्रम के सभी लोगों ने जब उनके देर से लौटने और धुमत्सेन की आंखें लौट आने के बारे में उनसे पूछा तो सावित्री ने सारी घटना कह सुनायी ।

ऋषि बोले, "बेटी, तूने अपने सदाचार और तपस्या से अपने दोनों

कुलों का उद्धार किया है । तू बड़ी धन्य है ।''

दूसरे दिन धुमत्सेन राजा के सारे मंत्री आश्रम पहुंच गये और उन्होंने यह खुशखबरी सबको सुनायी कि राजा के शत्रुओं को लोगों ने मार भगाया है और वे चाहते हैं कि उनका असली राजा लौट आये, चाहे वह अंधा ही क्यों न हो ।

राजा धुमत्सेन अपनी पत्नी, बेटे और बहू को लेकर अपनी राजधानी लौट गया ।

यमराज के वर के अनुसार सावित्री के सौ बेटे हुए जो बड़े ही शूरवीर निकले । राजा अश्वपति के भी सौ बेटे हुए ।

इस प्रकार सावित्री ने अपनी तपस्या के बल पर अपने पिता, माता, सास, ससुर और पति सभी का भला किया । इसीलिए हर साल सावित्री की याद करने के लिए यह वट-सावित्री व्रत रखा जाता है । जिस पेड़ के नीचे सत्यवान को उसके प्राण वापस मिले थे, वह बरगद का पेड़ था । इसलिए प्रतीक के तौर पर उसी पेड़ की पूजा की जाती है ।''

इतना कहकर अध्यापकजी तो कक्षा से चले गये, लेकिन हम सब कल्पना की एक अजब दुनिया में खो गये ।

इतने बरस गुजर गये, मगर बचपन में सुनी यह कहानी आज भी वैसी ही याद है जैसे कल ही सुनी हो । ●

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा की स्थापना १९३८ में महात्मा गांधी की प्रेरणा तथा पेरीन बहन केप्टन के सद्प्रयत्नों से हुई थी। इस संस्था की कोशिश ऐसी राष्ट्रभाषा विकसित करने की रही है, जिसे आम जनता आसानी से समझ सके और जो नागरी व उर्दू दोनों लिपियों में लिखी जा सके। वह भाषा है हिन्दुस्तानी !

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा दुनिया के सभी धर्मों से चुनी हुई, ज्ञान और आनन्द से भरी कहानियों की एक सौ किताबों का जो सेट बच्चों के लिए तैयार कर रही है, यह उसकी **चौथी** किश्त है। इस सेट के हर किताब की कीमत दो रुपये होगी।

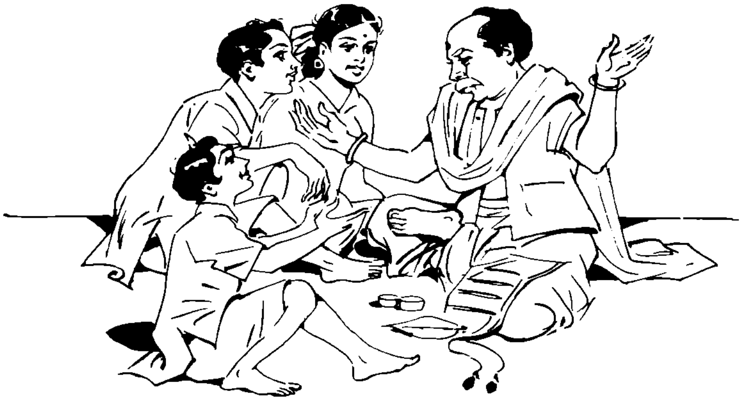

हमारे आगामी प्रकाशन

- राजा महाजनक
- संत जलाराम
- कंजूस इल्लीस
- कूरगडु मुनि
- कण देवता
- बक राक्षस का वध
- हनुमान
- स्वामी विवेकानंद
- सुनहरा नेवला
- भाई हो तो भरत जैसा

बच्चों की कहानियां

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा
बंबई-४००००२